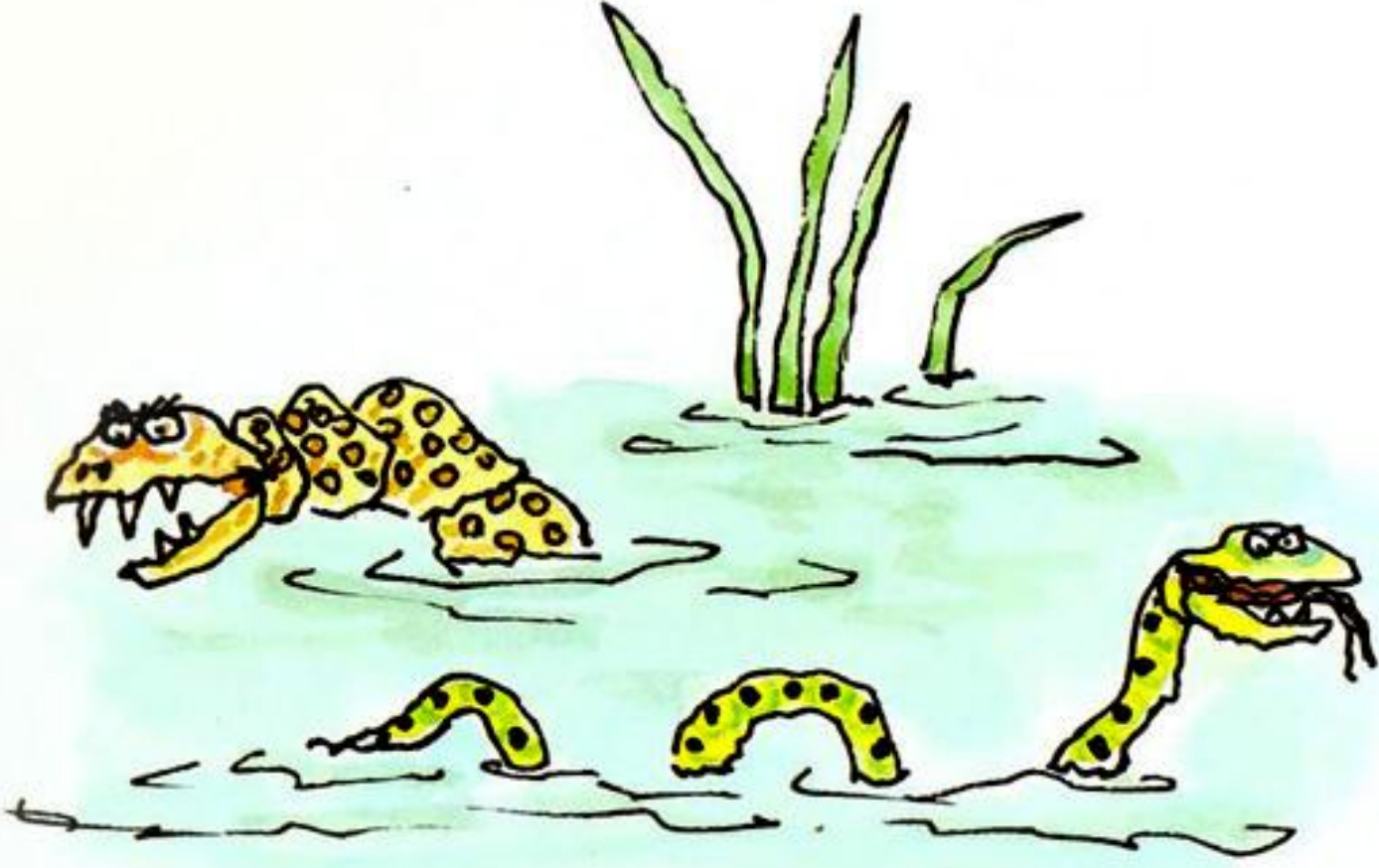


श्रेक



विलियम स्टिग, हिंदी: विदूषक

श्रेक



विलियम स्टिग, हिंदी: विदूषक



उसकी माँ बदसूरत थी और पिता कुरूप थे, पर श्रेक की सूरत उन दोनों से भी बदतर थी. जब श्रेक छोटा था तब भी वो आग की लपट को नब्बे-गज दूर तक थूक सकता था और अपने दोनों कानों से धुआं निकाल सकता था. उसकी एक नज़र मात्र से ही दलदल के घड़ियाल डर के मारे चुप हो जाते थे. अगर कोई बेवकूफ सांप उसे डसने की जुरत करता तो वो तुरंत चक्कर खाकर मर जाता था.



एक दिन श्रेक के माता-पिता ने सोचा कि वे अपने लाडले बेटे को दुनिया में अकेले जाने देंगे जिससे कि वो वहां जाकर अपने हिस्से की तबाही मचा सके. फिर उन्होंने एक लात मारकर श्रेक को घर से विदा किया. अंत में श्रेक ने वो काला गड़ढा छोड़ा जिसमें वो पैदा हुआ था.



श्रेक बड़े वेग से सड़क पर आगे चला. उसके पूरे शरीर से भयानक धुआं निकल रहा था. उसके चाल से, डर के मारे फूल और पेड़ उससे दूर झुकने लगे. यह देखकर श्रेक फूला नहीं समाया.

फिर पेड़ों के झुरमुटे में उसे एक चुड़ैल दिखाई दी. वो तारपीन के तेल और कछुओं के जूस में चमगादड़ उबाल रही थी. वो शोरबे को लगातार हिला रही थी और गुनगुना रही थी:

“इस तरह मैं पकाती हूँ चमगादड़
हिलाओ चमगादड़, चखो चमगादड़
सुबह उठके मैं अचार बनाऊँगी
उन्हें चबा-चबा के खाऊँगी.”

“कितनी ज़ायकेदार बदबू आ रही है!” श्रेक खिलखिलाकर हंसा.

चुड़ैल भी डरावने दांव-पेंचों में उस्ताद थी. पर श्रेक पर एक नज़र डालते ही उसके होश उड़ गए.



जब चुड़ैल को कुछ होश आया तो श्रेक ने उससे कहा, “अगर तुम मेरी तकदीर बताओगी मैडम, तो अपने बालों की मैं तुम्हें कुछ दुर्लभ जूँ दूंगा.”

“वाह, बहुत अच्छा!” चुड़ैल ने डरते हुए कहा. “लो यह रही तुम्हारी तकदीर:

“हाय-हाय हैय्या, सुन मेरे भैया
चुड़ैल की बात, सुन मेरे भैया
गधा ले जाएगा तुझे योद्धा के पास
जीतागा तू हारेगा वो,
शादी करेगा तू राजकुमारी से
जो होगी तुझसे भी बदसूरत
हाय-हाय हैय्या, सुन मेरे भैया
जादू शब्द है – दैय्या-रे-दैय्या”

“क्या राजकुमारी!” श्रेक चिल्लाया. “फिर मैं वहीं चला!”





जल्द ही श्रेक एक किसान के पास पहुंचा जो हंसिये से फसल काट रहा और एक गीत गुनगुना रहा था”

“तुम इतने खुश क्यों लग रहे हो?” श्रेक ने पूछा.

किसान ने दबी जुबान में जवाब दिया:

“फसल काटते खुश हूँ हरदम
करता रहूँगा यही मरते दम
आज बहुत काम है. इसलिए गुडबाय.”



“तुम्हारे बस्ते में क्या है? श्रेक ने चिल्लाकर पूछा.

“उसमें तीतर का ठंडा गोشت है.”

“अरे वाह! तीतर का गोشت!”

फिर जब श्रेक ने बस्ते की ओर देखा तो उसकी नज़र से गोشت तपने लगा. यह देखकर किसान बेहोश हो गया. श्रेक ने गरमा-गरम खाना खाया और फिर आगे बढ़ा.



श्रेक जहाँ से भी गुज़रा वहाँ से लोग और जानवर अपनी दुम दबाकर भागे.
सब लोगों और जानवरों को उससे कितनी घृणा थी, यह देखकर श्रेक खुश हुआ.





जल्द ही आसमान से मोटी-मोटी पानी की बूँदें श्रेक की गरम खोपड़ी पर गिरने लगीं.

“क्या तुमने आजतक इससे ज्यादा घिनौना कोई इंसान देखा है?” बिजली ने गरजते हुए बादल से पूछा.

“कभी नहीं,” बादल घुराया, “चलो आज इसे मज़ा चखाते हैं.”

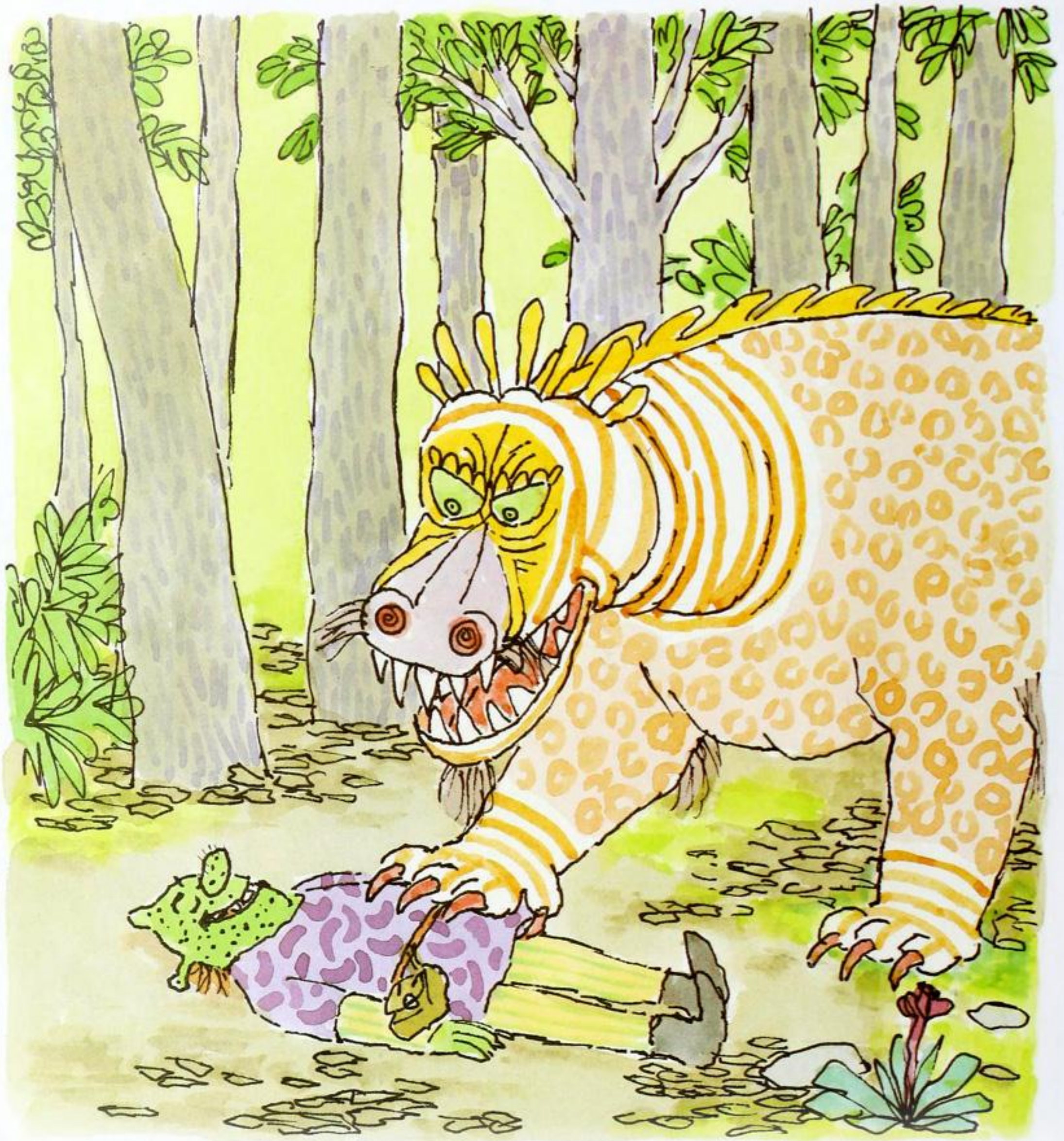
फिर क्या था बिजली तेज़ी से, श्रेक के सिर के ऊपर कड़की. पर श्रेक, बिजली को तुरंत निगल गया. फिर उसने अपने मुंह से कुछ और धुआं भी छोड़ा और मुस्कुराया. श्रेक को देखकर बादल, बिजली और बारिश वहां से तुरंत दम दबाके भागे.



जिंदादिल और खुशमिजाज़ श्रेक अब आगे चला. जैसे ही वो जंगल में घुसा उसे पेड़ पर एक तख्ती टंगी दिखी. उस पर यह चेतावनी लिखी थी:

“आने वाले अजनबी यहीं पर ठहर
आगे मत बढ़, खतरे की डगर
अगर तू जिंदा रहना चाहता है
तो वापसी की पगडंडी पकड़.”

श्रेक बिना कोई परवाह किए आगे चला.



जंगल में कुछ ही दूरी पर एक भयानक दैत्य ने उसका रास्ता रोका. श्रेक उसे देखकर मुस्कुराया. उसने झुककर दैत्य का अभिवादन किया. दैत्य ने श्रेक को ज़मीन पर पटक दिया, पर श्रेक वहीं लेटा रहा. उसे इसमें काफी मज़ा आया.



दैत्य, श्रेक के दो टुकड़े करना चाहता था. तभी श्रेक ने दैत्य की आँखों के बीच बदबूदार नीली जलती आग की लपट फेंकी.

उससे बेचारा दैत्य ज़मीन पर धम्म से गिरा और फिर पूरे दिन बेहोश पड़ा रहा.



एक घंटे बाद श्रेक खुद भी बेहोश हो गया. यूं कहिये कि रास्ते में उसे ज़ोर की नींद आ गयी. उसने सपने में देखा कि वो फूलों से भरे एक बाग़ में लेटा था और उसके चारों ओर बच्चे खेल रहे थे और चिड़ियों चहचहा रही थीं. कुछ बच्चे लगातार श्रेक से आकर लिपट रहे थे और उसे पुच्ची दे रहे थे. श्रेक ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की, पर वो उसमें बिल्कुल असफल रहा.



अचानक उसकी नींद खुली और वो एक छोटे बच्चे जैसे बड़बड़ाते हुए उठा.
“वो बस एक खराब ख्वाब था, एक भयानक सपना था!”



फिर श्रेक आगे बढ़ा. क्या कभी मुझे राजकुमारी मिलेगी भी? वो सोच ही रहा था, तभी उसे दूरी पर, घास चरते हुए एक गधा दिखा. क्या यह वही गधा था जिसका चुड़ैल ने ज़िक्र किया था? श्रेक, उस गधे की तरफ दौड़ा. उसने जादुई मन्त्र “दैय्या-रे-दैय्या” का उपयोग किया.

यह सुनकर गधे ने अपनी बोझिल आँखों को ऊपर उठाया और रम्भाया:

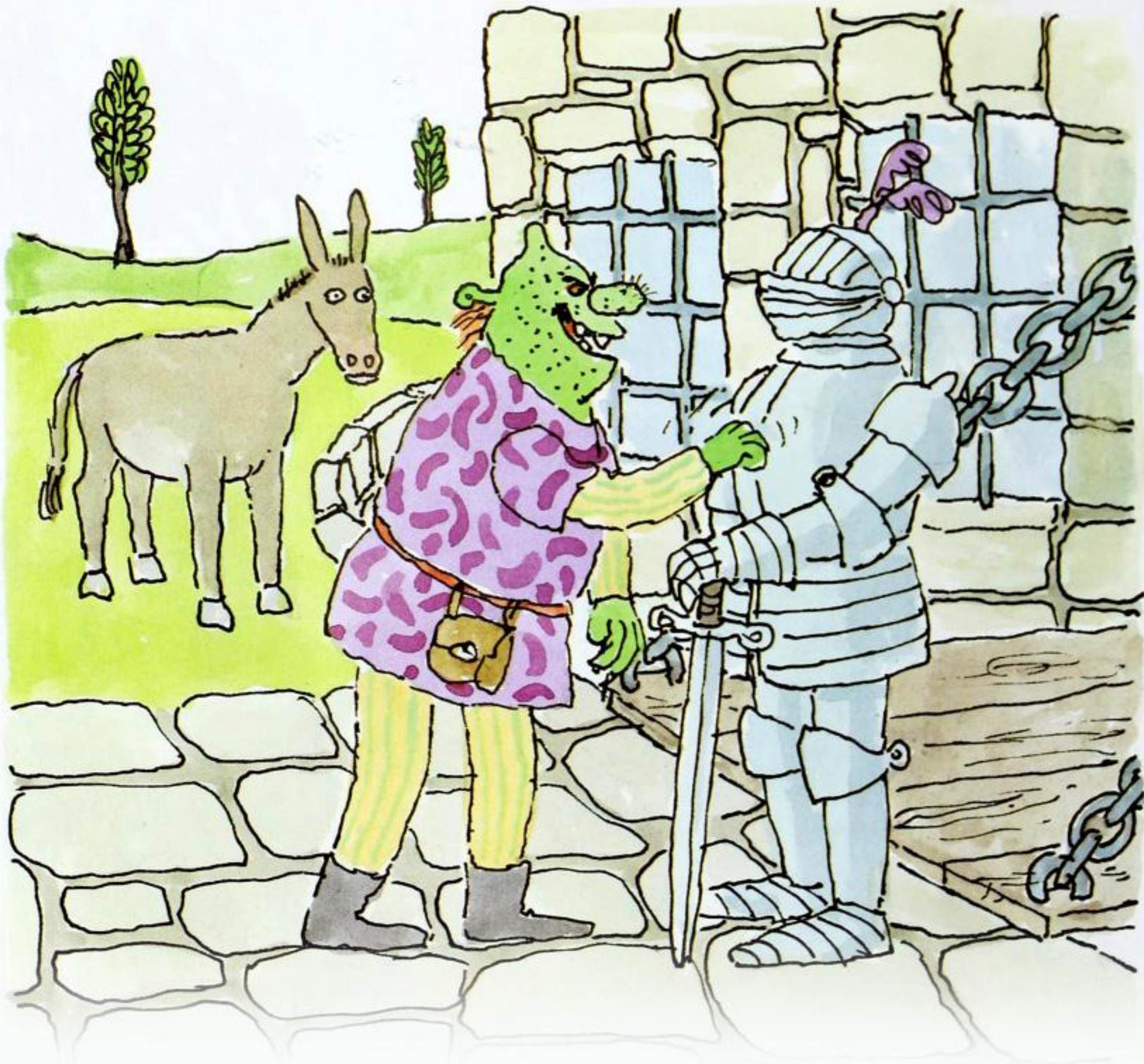
“खेत हरा-भरा, घास से भरा
दिनभर चरता, तभी पेट भरता
कभी छांव, कभी धूप
कुरूप हो चाहें मेरा रूप.”



“अरे भाई गधे!” श्रेक उसे देख चिल्लाया. “तुम मुझे कहीं लेकर जाने वाले थे, क्या हुआ?”

“चलो, योद्धा के पास. योद्धा महल का रखवाला है. महल बियाबान, अजीब है. महल के अन्दर है एक अप्रिय, भोंडी राजकुमारी. वो तुम्हारा इंतज़ार कर रही है.”

“फिर देरी क्या, चलो!” श्रेक चिल्लाया. फिर वो गधे की पीठ पर सवार हो गया.



कुछ देर बाद वो महल के चारों ओर बनी खाई और उसके छोटे पुल तक पहुंचे. वहां पर एक योद्धा तलवार और कवच के साथ तैनात था. श्रेक ने उसको थपथपाया और पूछा: “इस कवच के अन्दर कौन है? सामने उस महल में कौन रहता है?”

“इस कवच के अन्दर है शूरवीर योद्धा, और महल में रहती है डरावनी राजकुमारी,” उसने उत्तर दिया.

“वो मेरी राजकुमारी है!” श्रेक ने कहा. “मैं उससे शादी करने आया हूँ!”

“मैं अपने जीते-जी यह कभी नहीं होने दूंगा!” शूरवीर योद्धा चिल्लाया.

“तब यह तुम्हारी मौत के बाद यह संभव होगा,” श्रेक ने उससे सहमति जताते हुए कहा.



“अपने आप को इतना बहादुर मत समझो!” शूरवीर योद्धा ने कहा.

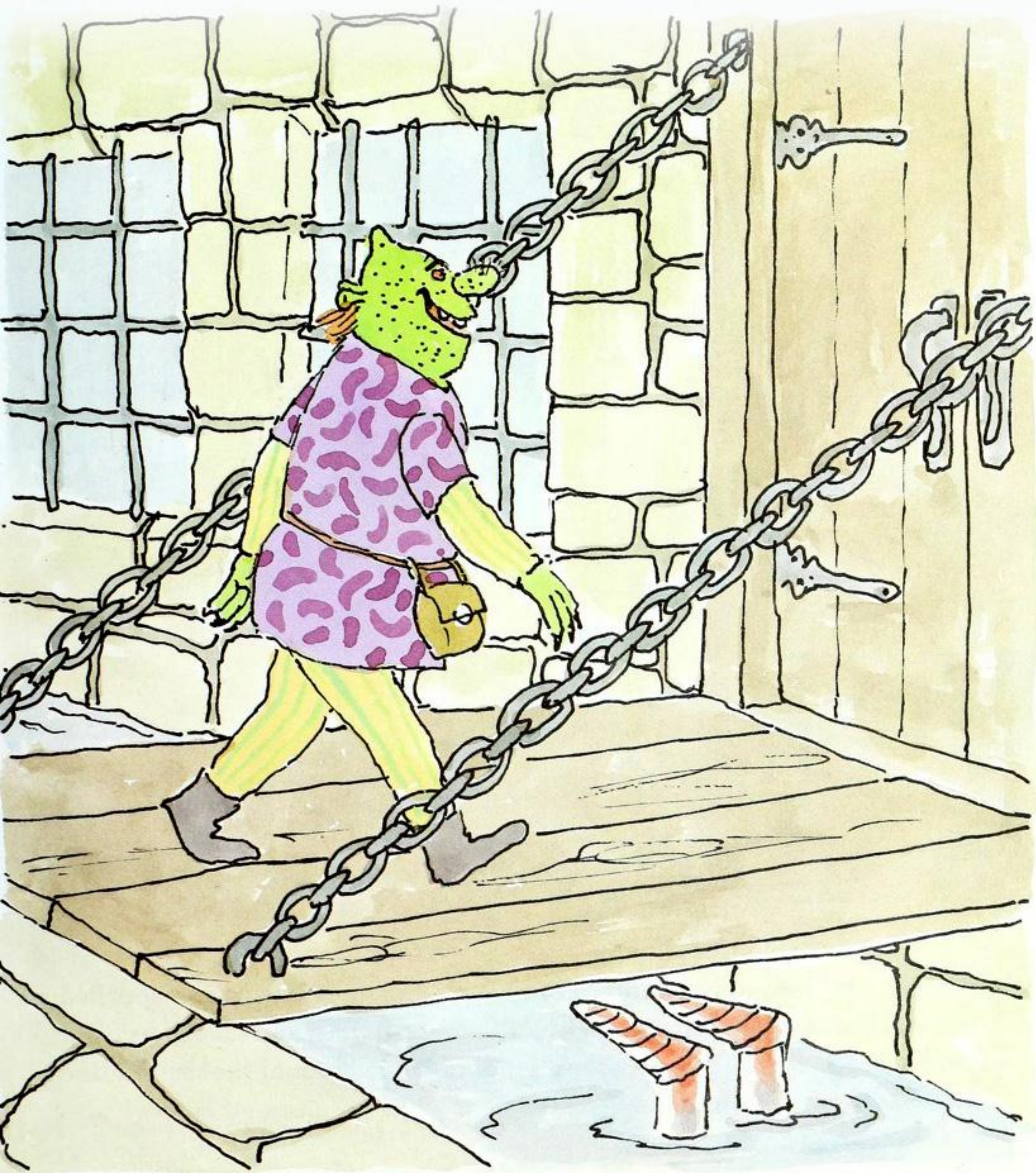
“मुझे अन्दर जाने दो जिससे मैं अपनी राजकुमारी से मिल सकूँ,” श्रेक ने कहा.

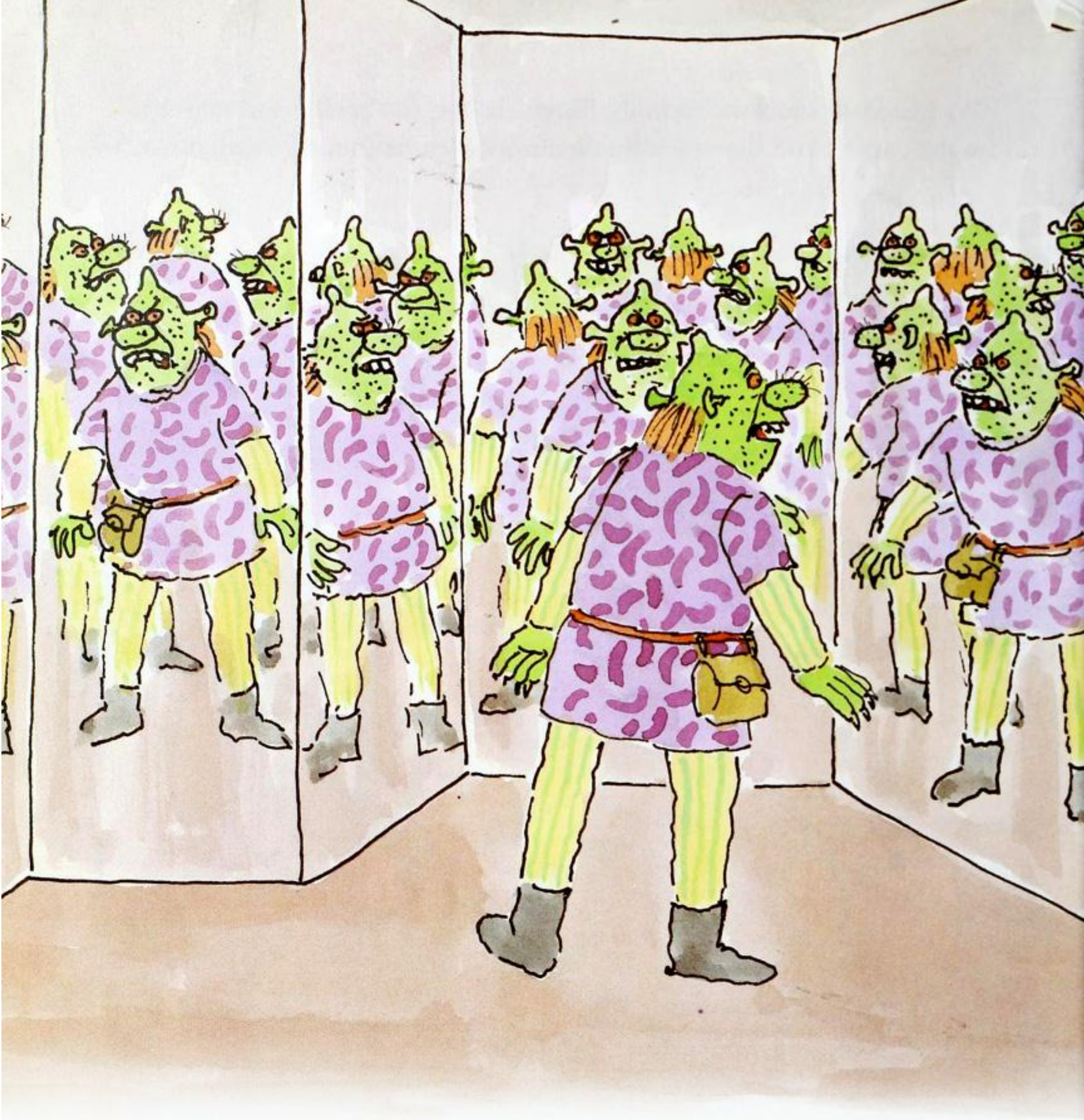
“फिर तुम्हारी खैर नहीं! मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा,” योद्धा ने कहा. फिर उसने वार किया.

उसके बाद श्रेक ने अपनी आँख खोली और अपने मुँह से आग की एक लम्बी लपट फेंकी. योद्धा से वो गर्मी बर्दाश्त नहीं हुई. बचने के लिए वो उस गहरी खाई में कूद पड़ा.



जीत के इस आनंद के बाद श्रेक ने फिर पुल पार किया और महल की ओर बढ़ा.
महल में घुसने के बाद उसे अपनी ज़िन्दगी में पहली बार डर का एहसास हुआ.





वहां वो चारों ओर सैकड़ों भयानक, डरावने प्राणियों से घिरा था. वो इतना सहम गया कि बड़ी मुश्किल से ही वो अपने मुंह की लपट को बाहर फेंक पाया. फिर क्या हुआ?

उन प्राणियों ने भी उसकी तरफ लाल, सुलगती लपटें फेंकीं. श्रेक दौड़ा, वे भी दौड़े. जब श्रेक ने एक प्राणी पर वार किया तो असल में वो एक कांच से जाकर टकराया.



श्रेक को पता नहीं था की वो वहां शीश-महल में था! “वो सारे डरावने प्राणी तो मेरी ही परछाईं थे! अब उसे अच्छा लगा. अपनी बदसूरती और डरावनेपन का उसे पहली बार सही अंदाज़ हुआ. अब श्रेक खुद से खुश था.



जैसे ही श्रेक महल में अन्दर घुसा उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया. उसके सामने इस दुनिया की सबसे बदसूरत, कुरूप, भद्दी राजकुमारी बैठी थी.

श्रेक ने तुरंत जादुई मन्त्र “दैय्या-रे-दैय्या” का उच्चारण किया.

“कॉक-ऐ-डूडील-डू!” राजकुमारी ने बड़े प्रेम भरे शब्दों में कहा.



श्रेक ने कहा: “तुम्हारे बदसूरत थोबड़े, चूहे जैसी नाक, झुर्रियों वाले गाल, और छछूंदर जैसा मुंह पर मैं कुर्बान हूँ.”

राजकुमारी ने कहा: “तुम्हारी पकोड़े जैसी नाक, नुकीले सिर, बेशर्म आँखें और आग जैसे लाल चेहरे पर मैं एकदम फ़िदा हूँ.”

श्रेक ने कहा:

“नीले आँठों वाली डरावनी बेगम
तुमने किया है मुझे एकदम बेदम.
तुम्हारे प्यार का मैं दीवाना हूँ
तुम शमा, मैं परवाना हूँ!”

राजकुमारी ने कहा:

“तुम्हारा चेहरा इतना विकृत
जैसे घोड़े का हो यकृत
यह है राक्षसों की वादी
जल्दी करो मुझसे शादी.”





फिर क्या था. श्रेक ने राजकुमारी की नाक को काटा. राजकुमारी ने श्रेक के कान को काटा. फिर दोनों एक-दूसरे की बाहों में लिपट गए. धुंए और आग की तरह वे एक-दूसरे में लीन हो गए.

जल्द ही दोनों की शादी हुई. उसके बाद वे एक लम्बे अरसे तक जिंदा रहे. जो भी उनसे पंगे लेता वे उन्हें डराते-धमकाते रहे.



श्रेक



A C Library T ar

विलियम स्टिग, हिंदी: विदूषक

ISBN 6-7857-2221-1